Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

भारतीय समाज में ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक पक्ष

रेनु शिवहरे
शोधार्थी, गृहविज्ञान, जीवाजी विश्वविधालय, ग्वालियर, म0प्र0

संक्षिप्त रूप

महिलाओं को समाज या समुदाय से जुड़े मुद्दों पर निर्णय लेने की शक्ति प्राप्त होना उनकी सामाजिक स्वतंत्रता में वृद्धि करता है। आर्थिक सशक्तिकरण का अभिप्राय शक्ति प्रदान करने, मानसिक अथवा शारीरिक गतिविधियों के सम्पादन की क्षमता के विस्तार को दर्शाता है। वर्तमान में महिलायें अपनी क्षमताओं का विकास कर घरेलू कार्यों में बेहतर समायोजन कर रही हैं और घर तथा बाहर स्वतंत्रता की अनुभूति कर रही है। महिला सामाजिक स्वतंत्रता का मुख्य पक्ष महिलाओं के अस्तित्व का अधिकार और समाज द्वारा उसकी स्वीकारिता है। पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी सफलता के झंडे गाड़े हैं। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति न दर्ज की हो। यही कारण है कि वर्तमान में सरकार भी ऐसे विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दे रही है।

जिस प्रकार दोनों पंखो में समान शक्ति का अभाव हो तो पक्षी का उड़ना सम्भव नही होता है उसी प्रकार से स्त्रियों तथा पुरूषों के स्तर में समानता न हो किसी भी राष्ट्र का विकास असम्भव है। भारत मे अभी भी स्त्रियों और पुरूषों मे असमानता बनी हुई है इसी कारण से विकास की गति धीमी है प्राचीन भारत में नारी का स्थान जितना ऊँचा था अब नही है। फलस्वरूप देश कि आर्थिक विकास का पक्ष कमजोर है। हमारी सरकार इन परिस्थितियो से जूझने के लिये निरन्तर प्रयत्नशील है। महिलाओ का आर्थिक पक्ष मजबूत करने के लिये कई योजनओ संचालित कर रही है।[1]

मनुस्मृति– 3/55 के स्लोक "**यंत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता**" के अनुसार जहॉ नारी की पूजा की जाती है। वहॉ देवता निवास करते है। यह प्राचीनकाल मे भारत के ऋषि – मुनियों ने नारी के महत्व को भली–भॉति समझा था, समय के परिवर्तन के साथ साथ स्त्रियों की स्थिति मे भी परिवर्तन होता गया प्रेम, बलिदान समर्पण ही स्त्रियों के लिए विष बन गया। समाज मे घृणित विचाराधारा ने उसका क्षेत्र केवल घर की चारदीवारी तक ही सीमित कर दिया समाज सुधारक गोस्वामी तुलसीदास ने सारी की इस स्थिति का चित्रण इन शब्दों मे किया–

कत विधि सृजी नारी जग माही
पराधीन सपनेहुँ सुख नाही।।

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

मुगलकाल मे परदा प्रथा आरम्भ हुई और स्त्री को शिक्षा प्राप्त करने के अधिकार से वंचित कर दिया गया, स्त्री ने स्वयं को पुरूषों के चरणों मे समर्पित कर दिया, किन्तु पुरूषों ने उसे बन्धनों मे जकड लिया, पुरूषों के किसी भी काम मे दखल देना उसके लिए अपराध–सा हो गया था, इन सबका नारी को भी स्वयं ध्यान नही रहा राष्ट्रकवि मैथिलीकरण गुप्त ने नारी की इस सोचनीय दशा का वर्णन अपनी कविता की पंक्तियों मे किया है।

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी
ऑचल मे है दूध और ऑखों मे पानी।।[2]

इस लिये महिला स्वतंत्रता के लिये चलाए जाने वाले आंदोलन को स्त्री बनाम पुरूष की लड़ाई में बदलकर लड़ने की जरूरत नहीं है इनके सम्बन्ध सहयोगात्मक हो महिला तभी सशक्त होगी। महिला का सशक्त होना केवल उसके हित में नहीं बल्कि पुरूष के हित में भी है, बल्कि सारे समाज और राष्ट्र के हित में है। कोई भी समाज और राष्ट्र अपने आधे अंग महिला की मुक्ति और मजबूती के बिना उन्नति नहीं कर सकता।[3]

समय परिवर्तनशील है यद्यपि भारत को आज भी पुरूष प्रधान देश कहा जाता है कुल ग्रामीण महिला श्रम शक्ति का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा कृषि मजदूरी व महानगरीय एवं शहरी क्षेत्रो मे महिलाओं क्योकि वहॉ शिक्षा नौकरी एवं उन्नति के अच्छे अवसर उपलब्ध है साक्षरता के क्षेत्र मे महिलाओ के बढ़ते कदम भारत मे महिलाओं की आर्थिक स्थिती की दिनो दिन और मजबूत कर रहे है चाहे कृषि उद्योग व्यवसाय इन्जीनियर चिकित्सा, विज्ञान, रक्षा, राजनीति, लेखन आदि का क्षेत्र हो या संचालन क्षेत्र मे आटो रिक्शा बस मेट्रो ट्रेन वह पायलट तक के कार्य मे आगे आकर देश की आर्थिक समृद्धि मे अपना योगदान दे रही है।[4]

ग्रामीण महिलाओं की स्थिति – किसी भी राष्ट्र को आगे बढना है ,तो उसे अपनी आधी आबादी को तो मजबूत करना की पडेगा इस लिहाज से देखा जाए, तो भारत की महिलाओं की स्थिति मे काफी सुधार आया है शहरों की अपेक्षा गॉवों मे भी लडकियॉ पढ़ रही है औरें आगे बढ रही है लड़के और लड़कियो के बीच भेदभाव काफी हद तक कम हुआ।

पंचायती राज मे महिलाओं की भागीदारी– पंचायती राज कार्यो मे भी महिलाऍ पीछे नहीं है देश भर में 2.5 लाख पंचायतो मे लगभग 32 लाख प्रतिनिधि चुन कर आ रहे है और इनमें से 14 लाख महिलाऍ चुन कर आ रही है महिलाओं की खुद के स्वाभिमान के लिए सकारात्मक संकेत है।

बदल रहा है समाज– महिलाओं की आर्थिक व शैक्षिक तथा मानसिक स्थिति में एक सकारात्मक बदलाव आया है, लेकिन अभी भी काफी कुछ करना बाकी है, कन्या भ्रूण हत्या आज भी सबसे बडी चुनौती है महिलाओं की सोच मे बदलाव होने तथा उनकी भूमिका बढने के बावजूद भी कन्या प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बेटी बचाओं, बेटी

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

पढ़ाओ योजना शुरू की क्योकि अभी भी कई जगह बेटों की पढाई पर लाखों खर्च करने वाले समाज बेटियों की पढाई से मौन है इस स्थिति को बदलने की आवश्यकता है और समाज की अनेक रूढिवादी सोच में बदलाव व उन्हे जागरूक करना आवश्यक है।

समानता की कोशिश जारी – लैंगिक समानता प्राप्त करना तथा महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सक्षम बनाना ही महिला सशक्तिकरण का उद्येश्य है इस मामले मे सरकार पूर्ण सजगता के साथ प्रयासरत् भी है वर्तमान सरकार ने भी न्याय कानून मे संशोधन कर और बेटी बचाओ बेटी पढाओं आदि योजनाए लाकर बहुत सारी उम्मीदे जगा दी है लैगिक शर्त मानसिकता में बदलाव लाने की है महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने मे रूढिवादी सोच रूकावट बन जाती है।5

भारत मे कामगारो का क्षेत्रवार वितरण 2011–12 प्रतिशत में

भारत मे महिला रोजगार का वर्तमान् परिदृश्य 2011–12 देश की सहतर फीसदी महिलाये ग्रामों मे निवास करती है उनमें से तीस से पैतीस प्रतिशत स्त्रियों के कन्धो पर घर एवं कृषि का भार होता है। और वही घर की संचालिका एवं मुखिया होती है। भारत मे स्त्रियों की भूमिका बहुआयामी होती है ग्रहणी एवं माता के रूप में वे घर परिवार की सम्मानती है। बल्कि इन कार्यो को करते हुये वे सभय निकालकर अर्थोपार्जन का कार्य भी करती हैदिन भर के चौणीय घंटा मे वे सालेह से अठारह घण्टे तक कार्यो मे संलग्न रहती है अतः श्रम विभाजन के असन्तुलन के कारण स्त्रियों पुरूष की तुलना मे अधिक घण्टो तक कार्य करती है।[6]

क्षेत्रवार वितरण	महिला कामगार	
	ग्रामीण क्षेत्र	शहरी क्षेत्र
विनिर्माण	10	29
सामुदायिक सेवाएँ	2	17
शिक्षा	3	13
व्यापार	3	13
कृशि	75	11
स्वास्थ्य देखभाल	1	5
निर्माण	7	4
वित एवं स्थावर सम्पदा	0	5
अन्य	35.8	4
श्रम बल सहभागिता दर		20.5
कुल कामगारों की संख्या मिलियन में	94	23

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

कर्नाटक के ग्राम मे अध्ययन के ऑकडे दर्शाते है कि गॉवों मे कृषि कार्यो गृह कार्यो एवं औद्योगिक कार्यो में कार्य कि कुल घण्टो मे स्त्रियों 46 प्रतिशत पुरूष उन प्रतिशत एवं बच्चे 17 प्रतिशत घण्टे कार्य करते है। केवल गृह कार्यो मे व्यतीत होने वासे कार्य के कुल घण्टो में महिलाओं 50 प्रतिशत तथा पुरूष 25 प्रतिशत एवं बच्चे 25 प्रतिशत घण्टे कार्य करते है

भारतीय महिलाये शिशु को जन्म देकर उनका उचित पालन पोषण करके सामाजिक दायित्व भी निभाती है तथा आर्थिक सामाजिक विकास मे उनका विशेष योगदान भी रहता है महिलाओं माता समुदाय की महत्तपूर्ण सदस्या का प्रवन्ध करती है। घर तथा घर मे रहने वालो की देखभाल करती है तथा प्रेम स्नेह आश्रय विवेकपूर्ण सलाह देकर मार्गदर्शन करके मानव विकास में सहायक होती है।

शैक्षिक विकास मे भी उनका योगदान रहता है यदि वे स्वयं पढ़ी लिखी होती है तो भी बच्चो को घर पर शिक्षा देती है। साथ ही वे घर मे आर्थिक समृद्धि हेतु कार्य मे सलग्न रहती है। साथ ही वे घर मे आर्थिक समृद्धि हेतु कार्य मे संलगन रहती है।[7]

महिलाओं को समाज या समुदाय से जुड़े मुद्दों पर निर्णय लेने की की शक्ति प्राप्त होना उनकी सामाजिक स्वतंत्रता में वृद्धि करता है। सशक्तिकरण का अभिप्राय शक्ति प्रदान करने, मानसिक अथवा शारीरिक गतिविधियों के सम्पादन की क्षमता के विस्तार को दर्शाता है। वर्तमान में महिलायें अपनी क्षमताओं का विकास कर घरेलू कार्यों में बेहतर समायोजन कर रही हैं और घर तथा बाहर स्वतंत्रता की अनुभूति कर रही है। महिला सामाजिक स्वतंत्रता का मुख्य पक्ष महिलाओं के अस्तित्व का अधिकार और समाज द्वारा उसकी स्वीकारिता है। पिछले कुछ वर्षों में महिलाओं ने हर क्षेत्र में अपनी सफलता के झंडे गाड़े हैं। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहाँ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति न दर्ज की हो। यही कारण है कि वर्तमान में सरकार भी ऐसे विकास कार्यक्रमों को बढ़ावा दे रही है जो महिलाओं के विकासोन्मुखी हो। जबकि पहले सरकार के पास केवल महिला कल्याणोन्मुखी योजनायें ही थी। स्त्रियों का सामाजिक, सार्वजनिक जीवन में प्रतिनिधित्व, दक्षता की वृद्धि उनके साथ होने वाले बुरे व्यवहार की समाप्ति सामाजिक सुरक्षा की प्राप्ति को दृष्टिगोचर करता है।[8]

ग्रामीण महिलाओ द्वारा किये जाने वाले कार्य

- भूमि से सम्बन्धित कार्य– जीव जन्तुओं से सम्बन्धित कार्य
- पशु पालन, मुर्गी पालन, मधुमक्खी पालन मत्सय पालन, रेश्म के कीडे पालना
- वस्त्र उद्योग सम्बन्धी कार्य–
- रंगाई, छपाई, वॉधनी कार्य, वाटिक कार्य कशीदकारी, वस्त्रो की सलाई, बुनाई उद्योग

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

- हस्तशिल्प कार्य
- चूडियॉ बनाना, चित्रकारी करना, गुडिया बनना
- ग्रामीण वन सम्पदा सम्बन्धी कार्य
- बेत का सामान बनाना, सीको की झाडू बनाना, सूप टोकरी बनाना, फूल झाडू बनाना,
- पलण्य दाने बनाना, मोमबत्ती ,चटाई , अगरबत्ती ,साबुन, मिट्टी के बर्तन व खिलौने बनाना
- खाद्य सामग्री सम्बन्धी कार्य–
- फलो के मुरब्बे बनाना, अचार बनाना पापड बनाना, दानो की वडिया बनाना, चिप्स बनाना, मसाले आदि पीसना, आटा पीसना,

अन्य सेवाये– चाये की दुकान चलाना, सब्जी बेचना, पान बेचना ,फूल मालाये बेचना, फल बेचना , दूध ,दही घी बेचना सजावटी जामान बेचना,मजदूरी करना लतानीज महिलाओ हेतु चलाये जाये।

महिलाओ के कार्य मे समानता एवं आर्थिक विकास मे समानता का मूल मंत्र

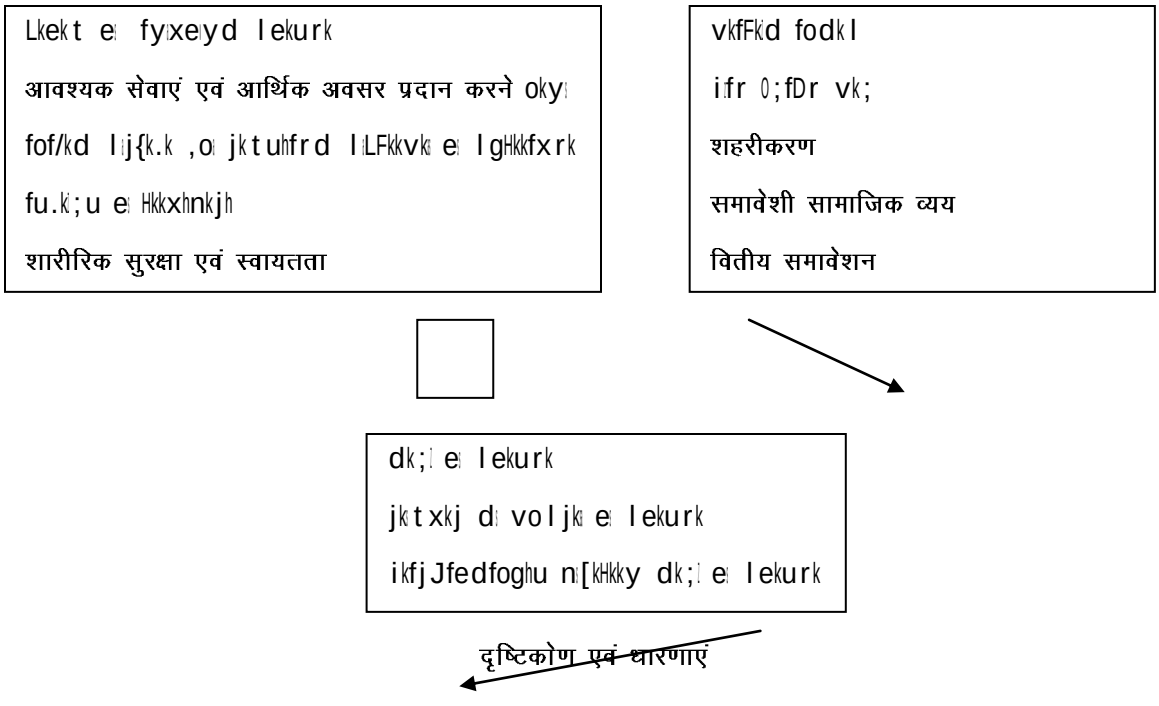

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन के 68वें चक्र के रोजगार एवं बेरोजगारी सर्वेक्षण 2011–12 के अनुसार शहरी क्षेत्रों में सामुदायिक सेवाओं, शिक्षा एवं व्यापार में लगी हुई हैं, जबकि ग्रामीण महिला कामगारी के लिए कृषि की प्रमुख व्यवसाय हैं। **सामाजिक** – आर्थिक – राजनीति धार्मिक आदि सभी क्षेत्र को में महिलाओ की स्थिति विश्व के लगभग सभी देशों मे कतिपय स्केण्डेवियायी देशों को छोडकर दोयम दर्ज की ही है

Jai Maa Saraswati Gyandayini ISSN: 2454-8367
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF) UGC Approved e-Journal No. - 43919 e-ISJN: A4372-3118

मानवाधिकारों, लोकतांत्रिक अधिकारी, व्यक्तिगत सुरक्षा की दुहाई देने वाले विकसित देशों –सं अमरीका, जापान, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि मे भी अनेक ऐसे क्षेत्र है।

अतः ग्रामीण महिलाओ को आर्थिक समानता स्थापित करने के लिए, जो कार्य नीति अपनाई जाए उसमें निम्नलिखित क्षेत्रों पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्कता है–

1. माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च ग्रामीण शिक्षा मे लिंगमूलक असमानता को पाटना।
2. सहगामी रोजगार अवसरों का सृजन करना।
3. अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्र में ग्रामीण महिलाओ के लिए कौशल प्रशिक्षण सुनिश्चित करना।
4. वित्तीय क्षेत्रक तक पहुॅच को बढाना, ताकि ग्रामीण महिला उद्यमियो को बेहतर वित्तीय सुविधाऍ मुहैया कराई जा सके।
5. निजी क्षेत्रक संगठनों मे लिंगमूलक विविधापूर्ण नीतियो एवं प्रवृतियों का प्रोन्नयन।
6. ग्रामीण महिलाओं हेतु विधिक प्रावधानो का सुदृढीकरण तथा इन कानूनो का बेहत प्रवर्तनः।
7. वर्तमान मे महिलाओं को बडे पैमाने पर उलझाए रखने वाले घरेलू कामकाज के बोझ से मुक्ति दिलाए जाने के लिए अधोरचना से जुडे मुद्दों तथा सेवाएं प्रदान करने पर ध्यान देना।
8. समानता स्थापित करने के लिए राजनीतिक एवं आर्थिक पहल और राज्य का हस्तक्षेप जितना अधिक आवश्यक है, उतना ही जरूरी सामाजिक दृष्टि मे और ग्रामीण महिलाओं के प्रति रवैए में बदलाव लाए जाने की आवश्यकता है, इस दृष्टि से निम्नलिखित प्रकार के हस्तक्षेष की आावश्यकता है।
9. वितीय प्रोत्साहन एवं सहायता।
10. नकदी हस्तान्तरण।
11. ऋण/ साख प्रदान करने मे महिलाओं को प्राथमिकता।
12. सरकारी सहायता प्राप्त बाल देखभाल केन्द्र।
13. बेटी बचाओं बेटी पढाओ जैसे कार्यक्रम।
14. कार्पोरट सामाजिक उतरदायित्व के तहत् बालिका छात्रवृत्ति तथा बालिका विद्यालयों को सहायता।
15. .विद्यालयों मे बालिकाओ के लिए स्वच्छता सुंविधाओं का प्रावधान।
16. बालिकाओं की नामांकन दर नीची वाले क्षेत्रों मे बालिका विद्यालयों की स्थापना।[9]

सन्दर्भ सूची–

1. प्रसार शिक्षा एवं संचार व्यवस्था गीता पृश्ष षा जायस पुश्ष षां अग्रवाल पब्लिकेशन पृ संख्या 251।
2. प्रतियोगिता दर्पण – महिला सशक्तिकरण के लिए जारी प्रयास/मई/2016/पृ 92।

Jai Maa Saraswati Gyandayini
An International Multidisciplinary e-Journal
(Peer Reviewed, Open Accessed & Indexed)
Web: www.jmsjournals.in Email: jmsjournals.in@gmail.com
ISSN: 2454-8367
Vol. 3, Issue-I
July 2017
Impact Factor : 4.032 (IIJIF)
UGC Approved e-Journal No. - 43919
e-ISJN: A4372-3118

3. प्रसार शिक्षा एवं संचार व्यवस्था गीता पृ षा जायस पुष्पां अग्रवाल पब्लिकेशन पृ संख्या 251।
4. प्रतियोगिता दर्पण जनवरी 2016 महिला सशक्तिकरण की दिशा मे बढते कदम पृ 92।
5. प्रतियोगिता दर्पण – महिला सशक्तिकरण के लिए जारी प्रयास/मई/2016/पृ 93।
6. प्रतियोगिता दर्पण /नारी शक्ति उच्च आर्थिक सवृद्धि एवं समृद्धि फरवरी 2016 पृ 74।
7. प्रसार शिक्षा एवं संचार व्यवस्था गीता पृश्ष षा जायस पुश्ष षां अग्रवाल पब्लिकेशन पृ संख्या 244।
8. ठाकुर हंसराज छत्तीगढ में महिलाओ श्रम सहभागिता दर एक अध्ययन 1669 से 2009 जनंगणना वर्ष 2015 पृ 3,4।
9. प्रतियोगिता दर्पण /नारी शक्ति उच्च आर्थिक सवृद्धि एवं समृद्धि फरवरी 2016 पृ 74।